## हिन्दुस्तानी भाषा में चौपाई सुरु

**भेख भाखा जिन रचो, रचियो माएने असल।**
**भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल।। १ ।।**

स्वामीजी कहते हैं भेष और भाषा के झगड़े में मत पड़ो। असल मायने के रस में मगन हो जाओ। रसूल साहब के ज्ञान की (कुरान की) हकीकत अब पूरी खुल गई है।

**लिए माएने ऊपर के एते दिन इन जहान।**
**मूल माएने पाए बिना, सुध न पड़ी बिरिध हान।। २ ।।**

आज दिन तक इस दुनियां के लोग कुरान के जाहिर मायने लेते थे, परन्तु मूल बातूनी मायने पाए बिना उन्हें हानि-लाभ की खबर नहीं हुई।

**करना सारा एक रस, हिन्दू मुसलमान।**
**धोखा सबका भान के, सब का कहूंगी ग्यान।। ३ ।।**

हमें हिन्दुस्तान के सब हिन्दू मुसलमानों को एक रस करना है, इसलिए मैं सबके संशय मिटाकर सबके ज्ञान को कहूंगी।

**पैंडे सब देखाइए, ज्यों समझे सब कोए।**
**मत सबन की देखाइए, ज्यों एक रस सब होए।। ४ ।।**

सब धर्मों को रास्ता दिखाना है जिससे सब कोई समझ जाए। सबके धर्मों के ज्ञान को बतलाना है जिससे सब एक रस हो जाएं।

**मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंडे दरसन।**
**देखी इस्क बंदगी सबकी, जैसा आकीन सबन।। ५ ।।**

मैंने संसार में सबके धर्मों के रास्तों को, शास्त्रों को, सबके इश्क, बन्दगी तथा सबके विश्वास को देखा है।

**एती जिमी सब छोड़के, जित आए मेंहेदी महंमद।**
**सो भली जिमी भाखा भली, इत हद मेट होसी बेहद।। ६ ।।**

सारे संसार को छोड़कर जहां इमाम मेंहदी प्रकट हुए हैं वहां की भूमि भी अच्छी है और भाषा भी अच्छी है। यहां से ही सारे संसार को मुक्ति मिलेगी। इनके द्वारा ही कर्मकाण्ड हद का ज्ञान छोड़कर एक धनी का पूजक सारा संसार होगा।

**एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए।**
**सो ए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए।। ७ ।।**

इतने दिन श्री राजजी के हुक्म से अलग-अलग धर्म, पन्थ चलते रहे। अब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के हुक्म से इन सबको मिलाकर एक कर देती हूं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। ३५ ।।

Nijanand App